शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लोक में संस्कारों का संचार करते लोकगीत

कमल किशोर रावत (शोधार्थी)
श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय,
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

लोकगीत अपने लोक की धड़कन होते हैं, इसलिए उन्हे महसूस किया जाता है। लोकगीतों के प्रतीक और बिम्ब अनूठे होते हैं, इसलिए उनकी व्याख्या सरल नहीं होती, लेकिन उनकी अपनी सरसता अपने स्वयं को व्याख्यायित करती रहती है। लोकगीतों की सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि वह किसी एक व्यक्ति अथवा समूह की सीमा में कैद नहीं रहते हैं। उनके सृजन में सामूहिकता होती है उसी प्रकार उनके गायन और प्रस्तुतीकरण में भी एकल भाव नहीं होता है। उन्हें समूह गाता है सारा लोक गाता है। उनमें लोक के भाव और भावनाएं समाहित होती हैं। लोकगीतों में लोक समाज स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। गीतों में लोक के सरोकार समाहित होते हैं। लोक में प्रचलित, लोक द्वारा लोक के लिए रचे गए गीत ही लोकगीत कहे जाते हैं। लोकगीतों में रीति-रिवाज, सामाजिक, धार्मिक व प्राचीन परम्पराओं के साथ-साथ संस्कृति के भी दर्षन होते हैं। गढ़वाल के लोकगीतों में संस्कार गीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत शोध पत्र में गढ़वाल के 'संस्कार लोकगीतों की जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

भूमिका

लोकगीतों का सामाजिक जीवन में बड़ा महत्व है। गढ़वाल में गाये जाने वाले लोकगीतों में पर्वतीय समाज की परम्पराओं, भावनाओं, आकांक्षाओं, सुख-दुःख और वास्तविकता के बोल साफ सुनाई देते हैं। भारत का दिव्य भाल नगाधिराज हिमालय और गंगा यमुना का उद्गम स्थल गढ़वाल नेपाल, तिब्बत, कुमाऊँ, उत्तरप्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश की सीमाओं से घिरा हुआ है। पुराणों में गढ़वाल को केदारखण्ड के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध तीर्थस्थल गंगोत्री-यमनोत्री, बदरीनाथ एवं केदारनाथ यहीं स्थित हैं। अनेक देवी-देवताओं के अधिवास और ऋषियों की तपस्थली के कारण इसे देवभूमि भी कहा जाता है। महाकवि कालिदास ने भी इसे देवभूमि कहा है। गढ़ों की अधिकता के कारण ही इसे गढ़वाल के नाम से जाना जाने लगा।

लोकगीतों की उत्पति समाज की समझ, सादगी और भावनाओं से होती है। इनमें लोक समाज में रहने वाले लोगों की भावनाओं की झलक दिखाई देती है। लोकगीत प्राचीन समय से चली आ रही सांस्कृतिक परम्परा के वाहक माने जाते हैं। लोकगीतों के रचयिता अज्ञात व रचना कालखण्ड अविदित है। लोकगीतों में मनुष्य के भाव प्रकट करने की अद्भुत क्षमता होती है और इनमें समाज के मनोरंजन करने के साथ ही तत्कालीन समय को व्यक्त करने की पर्याप्त क्षमता भी होती है। लोकगीतों में विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन मिलता है। यह गीत मानव संवेदना की अभिव्यक्ति करते हैं।

लोकगीत, लोक के गीत हैं, जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि सम्पूर्ण लोक समाज रचता है और स्वीकारता है। लोगों में प्रचलित, लोगों द्वारा रचित एवं लोगों के लिए रचे गये गीतों

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को ही लोकगीत कहा जाता है। गढ़वाल के लोक में गीतों के अनेक स्वर हैं जिनका सामूहिक गान इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वत्र दिखाई देता है।

लोक में संस्कार

लोक का अपना संस्कार होता है जो उसके दैनिक जीवन में दिखता है। लोक में संस्कार के गीतों की भी रचना हुई है। संस्कार गीत लोकगीतों का अभिन्न अंग है। लोकगीतों में संस्कार गीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कारों के अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं वह संस्कार गीत कहलाते हैं। विद्यानिवास मिश्र के अनुसार, "संस्कार गीतों में संस्कृति की पवित्रतम धरोहर सुरक्षित है। इसमें मनुष्य की दृष्टि कितनी विषद और व्यापक है कि राम-सीता, शिव-पार्वती, कृष्ण और राधा सभी का ऐश्वर्य पिघल कर मानवीय बन गया है।"

गढ़वाल में अनुष्ठान के समय गाये जाने वाले संस्कार गीतों का विशेष महत्व है। गढ़वाल में बालक के जन्म के समय पर, मुण्डन, यज्ञोपवीत व विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले गीत आज भी लोक में सुरक्षित हैं। विवाह संस्कार के अवसर पर आज भी गढ़वाल के विभिन्न क्षेत्रों में विवाह के गीत गाये जाने की प्रथा प्रचलित है, जिन्हें 'मांगल' गीत कहा जाता है। मांगल गीतों में विवाह की विभिन्न क्रियाओं और अनष्ठानों का वर्णन होता है। ये गीत वर-वधू दोनों पक्षों के घरों में गाये जाते हैं। इन गीतों में केवल विवाह की क्रियाओं का वर्णन नहीं बल्कि कन्या के मन की भावनाओं, कन्या पक्ष की करूणा व कन्या के ससुराल पक्ष का उल्लास स्पष्ट प्रकट होता है।

मांगल गीतों में विवाह के आरम्भ में देवताओं की स्तुति के गीत गाये जाते हैं। जिस प्रकार भारतीय परम्परा में किसी भी शुभकार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने के लिए देवताओं की वंदना की जाती है उसी प्रकार गढ़वाल में भी शुभकार्य की सफलता के लिए देवताओं की पूजा की जाती है। मांगल गीतों में कूर्म, पृथ्वी, गणेश, नारायण, भूम्याल व पंचदेवों से शुभकार्य की सफलता के लिए मंगलमय कामनायें की जाती हैं। शुभ शगुन देने के लिए मांगल गीतों में कौवे को हरे वृक्ष की शाखा पर बैठने का निमन्त्रण दिया जाता है। विवाह में निमन्त्रण समाज की एक सामान्य प्रथा है। गढ़वाल में लोकहृदय की विशालता और उदारता काव्यमयी है। विवाह में वेदमुखी ब्रह्मा, मंगल वाद्य बजाने वाले औजी, हल्दी की क्यारियों, मंगल गीत गाने वाली मंगलेरियों व अन्न उपजने वाले खेतों को भी न्यौता जाता है।

कन्या के गृह में बारात का पहुंचना विवाह का मुख्य आकर्षण होता है। बारात के आने की सूचना प्राप्त होते ही वधू पक्ष के लोगों में वर को देखने की उत्सुकता होती है, वहीं कन्या के मन में यह चिन्ता होती है कि वर और वर पक्ष के सत्कार में कोई कमी न रह जाए। ऐसा भाव इस अवसर पर गाये जाने वाले मांगल गीतों में शामिल होता है। इन मांगल गीतों में ही कन्या बारात के स्वागत के लिए अपने पिता को सतर्क भी करती है और यह सब गायन में गाया जाता है।

विवाह संस्कार में कन्यादान व सप्तपदी प्रमुख संस्कार माना जाता है। कन्यादान को सबसे श्रेष्ठ दान माना गया है। मांगल गीतों में इसका उल्लेख किया जाता है व विवाह के समय गाये जाने वाले मांगल गीतों में हर फेरे में कन्या की स्थिति को वर्णित किया जाता है और सातों फेरे गायन के साथ चलते हैं। कन्या की विदाई के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में करूणा का भाव होता है और ये गीत कन्या की मनःस्थिति का करुण चित्रण करते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संस्कार गीत

जीवन में संस्कारों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। हिन्दू धर्म में सोलह संस्कारों (षोडष संस्कार) का उल्लेख है, जो गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि क्रिया तक किये जाते हैं। गढ़वाल में भी संस्कार लोकगीतों में प्रमुख रूप से जन्म संस्कार, जातकर्म संस्कार, चूड़ाकर्म संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार व विवाह संस्कार के गीत विद्यमान हैं।

जन्म के गीत - सोलह संस्कारों में से एक जन्म संस्कार माना गया है। किसी भी परिवार में शिशु का जन्म पुण्य का फल माना गया है। गढ़वाली लोकगीतों में जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में शिशु को देवताओं का जाया कहा गया है।

पैले धरती उपजे, फिर उपजै अगास।
तब उपजै पौण पाणी।
मादेब का घर बेटा उपजे।
सुर्ज का घर उपजे कर्ण राजा।
नन्दू का घर नारैण जरमे।
हमारा घर बालक जरमे।

भावार्थ - पहले धरती जन्मी, फिर आकाश जन्मा। तब पवन और पानी जन्मे। महादेव के घर बेटा पैदा हुआ है। सूज के घर पुत्र पैदा हुआ है। ननंद के घर नारायण का जन्म हुआ है। हमारे घर बालक का जन्म हुआ है।

जातकर्म के गीत - गर्भस्थ बालक के जन्म होने पर जातकर्म संस्कार किया जाता है। जन्म होने पर जो भी कर्म सम्पन्न किये जाते हैं उसे जातकर्म कहते हैं। जातकर्म के बारे में कहा गया है- 'जाते जातक्रिया भवेत्। इसका अर्थ यह हैकि गर्भ से पैदा होने के समय शिशु के लिए जो भी चीजें की जाती हैं, उन सभी को जातकर्म कहा जाता है। गढ़वाल में पुत्र जन्म होने की सूचना को कन्या भौंरे के माध्यम से अपने मायके तक पहुंचाती है।

जा धौं भौंरा माँ जी का पास हमारी।
कुशल मंगल बोलीक आई।
जा धौं भौंरा बाबा जी का पास हमारा।
कुशल मंगल सुणै आई।
बोलणो भौंरा धि यान तुमारी माँजी।
रण जीत्यो, जाळ तोड्यो।
कल्याण बोली आई, कुशल बोली आई।

भावार्थ - जा तो भौंरे मेरी माँजी के पास। कुशल मंगल बोलकर आना। जा तो भौंरे मेरे पिताजी के पास। कुशल मंगल सुनाकर आ। भौंरे वहाँ जाकर कहना - तुम्हारी बेटी ने, जाल तोड़ लिया है, रण जीत लिया है। (प्रसव के संकट को पार कर लिया है)। कल्याण बोलकर आना, कुशल बोलकर आना।

चूड़ाकर्म के गीत - माता के गर्भ से जन्म लेने के बाद शिशु के सिर पर जो बाल होते हैं, उन्हें हटाने को चूड़ाकर्म (मुण्डन) कहते हैं। शिशु के जन्म लेने के बाद 1 वर्ष से 3 वर्ष या कुल परम्परा अनुसार 5वें वर्ष में मुण्डन कराए जाने की प्रथा है। गढ़वाल में मुण्डन संस्कार के समय बालक को पीले वस्त्र पहनाये जाते हैं और महिलाओं द्वारा बालक को हल्दी लगायी जाती है। इस समय महिलाओं द्वारा मुण्डन संस्कार के गीत गाये जाते हैं।

नाई रे नाई, तू मेरो धरम को भाई।
मेरा लाड़ा तू पीड़ा न लाई, पीड़ा न लाई।
त्वे द्यूलो नाई मै कानू कुंडल, शाल दुशाला।
त्वे द्यूलो नाई मै जरिदै कपड़ी, रेशमी पगड़ी।
मेरा लाडा तू पीड़ न लाई, नाई रे नाई।

भावार्थ - नाई रे नाई। तू मेरा धरम का भाई है। मेरे लाडले को पीड़ा न हो इसका ध्यान रखना। हे नाई यदि तुमने मुण्डन करते समय मेरे पुत्र

को पीड़ा नहीं पहुंचाई तो मैं तुमको सोने के कुण्डल, शाल और दुषाला उपहार में दूंगी। तुम्हे मैं जरी के कपड़े, रेषमी पगड़ी भेंट दूंगी। हे नाई भाई मेरे लाडले को पीड़ा न पहुंचाना।

यज्ञोपवीत संस्कार के गीत - यज्ञोपवीत का अर्थ है- यज्ञ रूपी परमात्मा के लिए जो (प्रतिज्ञा सूत्र) धारण किया जाता है उसे यज्ञोपवीत कहा जाता है। गढ़वाल में यज्ञोपवीत संस्कार प्रायः मुण्डन के समय, मुण्डन के पश्चात और सामान्यतः विवाह के समय पर किया जाता है। गढ़वाली लोकगीतों में इस संस्कार में होने वाली क्रियाओं का वर्णन किया जाता है। लोकगीतों में जनेऊ हेतु कपास उगाने, धुनने, कातने, जनेऊ बटने, वेदमुखी ब्रह्मा को न्यौता देने, दंड धारण व भिक्षा मांगने का वर्णन सुनने को मिलता है।

भली-भली पुंगड़्यों माँ बोई छ कपास, बोई छ कपास / भाई-बैणोन मिली गोडी छ कपास, गोडी छ कपास।

डनिया धुनियान मिली धूनी छ कपास, धूनी छ कपास / माँजी भौजीन मिली काती छ कपास, काती छ कपास / ब्रह्मा का बेटन बटी छ कपास, बटी छ कपास / बणावा ब्रह्मा जी नौलड़्या जनेऊ, नौलड़्या जनेऊ।

पैर लाडा नौलड़्या जनेऊ, नौलड़्या जनेऊ।

भावार्थ - भले-भले खेतों में कपास बोई है। भाई-बहिनों ने मिलकर कपास की गुडाई की है। कपास को धुनिया ने धुना है। माँ और भाभी ने मिलकर कपास को काता है। ब्रह्मा के बेटे ने कपास को बटा है। ब्रह्मा जी ने नौ लड़ियों वाला जनेऊ बनाया है। मेरे लाडले तू नौ लड़ियों वाला जनेऊ पहन।

विवाह संस्कार के गीत - हिन्दू धर्म में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है। विवाह दो शब्दों से मिलकर बना है- वि $ वाह। इसका शाब्दिक अर्थ है- विशेष रूप से (उतरदायित्व का) को वहन करना। गढ़वाल में विवाह संस्कार के समय पर मांगल गीतों को गाने की प्रथा है। वर्तमान में भी गढ़वाल के कई क्षेत्रों में विवाह के अवसर पर मांगल गीत गाये जाते हैं।

क - मांगल गीत (देव पूजन)

दैणा होंया खोळी का गणेश।
दैणा होंया मोरी का नारैण।
दैणा होंया पंचनाम देवा।
दैणा होंया भुमि का भूम्याळ।

भावार्थ - गढ़वाल में किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले देवी-देवाताओं का पूजन किया जाता है। जिसमें प्रथम पूज्य श्री गणेश, श्री नारायण, पंचनाम देवताओं और भूमि के अधिष्ठाता देव भूम्याल देवताओं का पूजन किया जाता है। देवताओं से शुभकार्य के निर्विघ्न सम्पन्न होने की प्रार्थना की जाती है।

ख - मांगल गीत (आह्वान)

औ बैठ कागा हरिया बिरिछ।
बोल कागा चौदिशी सगुन।
त्वे द्यूलौ कागा दूध भाती।
बोल कागा चौदिषी सगुन।
त्वे द्यूलौ कागा दही भात पूड़ी

भावार्थ - लोक मान्यता में कौवे को बड़ा मान मिला है उसे मंगल कार्यों में उच्च स्थान प्राप्त है इसलिए पहले उसे ही न्यौता जाता है। इस मांगल गीत में कौवे को हरे वृक्ष में बैठने को आमन्त्रित कर उससे चारों दिशाओं में शगुन फैलाने को कहा जा रहा है। उसे कहा जाता है कि तुम चारों दिशाओं में शगुन फैलाओ मैं तुमको दूधभात(चावल), दही और पूड़ी दूंगी।

ग- मांगल गीत (निमन्त्रण)

पैले न्यूते-पैले न्यूते वेदमुखी बरमा।
आज चैन्द बरमा जी को काज।
तब न्यूते, तब न्यूते औजी को बेटा।
आज चैन्द बढ़ैं को काज।
आज न्यती याले मैन हलदानू की बाडी।
आज चैन्द हलदी को काज।

भावार्थ - गढ़वाल में मंगल स्नान से पूर्व सबसे पहले वेदमुखी ब्रहमा को निमन्त्रित किया जाता है। उनसे कहा जाता है कि आज ब्रहमा जी का कार्य है। उसके बाद औजी (बाजगी) के पुत्र को न्यौता दिया जाता है। उससे कहा जाता है कि आज बधाई का कार्य है। उसके बाद मैंने आज हल्दी की क्यारियों को न्यौता दिया है क्योंकि आज हल्दी का काम है।

घ - मांगल गीत (बांद गीत)

बांद देली दीदी स्वागीण।
बांद देली चाची स्वागीण।
बांद देली बौजी स्वागीण।
बांद देली मांजी स्वागीण।

भावार्थ - गढ़वाल में मंगल स्नान के प्रारम्भ में बांद दिये जाने की परम्परा है। जिसमें सुहागिनों द्वारा बांद दिये जाते हैं। ऐसा मांगल गीत में कहा जा रहा है कि सौभाग्यवती बहिनें मुझे बांद देंगी। सौभाग्यवती चाची मुझे बांद देंगी मेरी सौभाग्यवती भाभी मुझे बांद देंगी और मेरी सौभाग्यवती माता मुझे बांद देंगी।

ङ - मांगल गीत (मंगल स्नान)

क्यान होये, क्यान होये कुण्डी कौज्याक ?
क्यान होये होलो सूरिज धुमैलौ ?
उबादेसू उबादेसू गौरा जी नहेणी।
तब होये तब होये कुण्डी कौज्याक ।
क्यान आई, क्यान आई सिन्धु छलार ?
उबादेसू उबादेसू लछमी नहेणी।
यान होये यान होये सिन्धु छलार।

भावार्थ - इस मांगल गीत में कन्या के सौन्दर्य की आभा अलकनन्दा के जल से की गयी है। इस गीत में कहा जा रहा है कि जल कुण्ड आज क्यों मटमैला हो गया है ? क्यों आज सूरज धुंधला हो गया है ? आज ऊपर उच्च देश में गौरा जी स्नान कर रही हैं इसलिए कुण्ड मटमैला हो गया है और सूरज धुंधला गया है। इसी मांगल में कहा जा रहा है कि आज सिन्धु में क्यों लहरे उठ रही हैं ? आज ऊपर उच्च देश में लक्ष्मी जी स्नान कर रही हैं इसलिए आज सिन्धु में लहरें उठ रही हैं।

च - मांगल गीत (बारात स्वागत)

कै भड़ को आई होलो यू दलबल।
कै भड़ की आई होली या पिंगळी पालकी।
केक सेन्दो बाबा जी निंद सुनिंद।
ऐ गैन बाबा जी जनती का लोक।

भावार्थ - इस मांगल गीत में कन्या बारात घर के समीप पहुंचने पर पिता को बारात के स्वागत के लिए सजग करती है। इस गीत में वर्णन है कि यह दलबल किस वीर का आया है। ये पीली पालकी किस वीर की है। पिताजी बाराती लोग आ गये हैं और आप क्यों गहरी निद्रा में सोये हो।

छ - मांगल गीत (सप्तपदी)

पैलो फेरो फेर लाडी, कन्या च कुँवारी।
दूजो फेरो फेर लाडी, कन्या च मा की दुलारी।
तीजो फेरो फेर लाडी, कन्या च भायो की लाडली।
चौथो फेरो फेर लाडी, मैत छोड्यालो।
पाँचो फेरो फेर लाडी, सैसुर की च त्यारी।
छठो फेरो फेर लाडी सासु की च ब्वारी।
सातों फेरो फेर लाडी कन्या ह्वे चुके तुम्हारी।

भावार्थ - फेरे के समय पर गाये जाने वाली इस सप्तपदी मांगल में कन्या के वैवाहिक जीवन में प्रवेष का वर्णन है। इस में उल्लेखित है कि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लाडली पहला फेरा फेर तु कुंवारी कन्या है। दूसरा फेरा फेर लाडली तु माँ की दुलारी है। तीसरा फेरा फेर तु भाइयों की लाडली है। लाडली चौथा फेरा फेर तुने मायका छोड़ दिया है। बेटी पांचवा फेरा फेर ससुराल की तैयारी है। छठवां फेरा फेर लाडली सास की बहू बन गयी और सातवां फेरा फेर अब लाडली तुम्हारी हो चुकी है।

ज - मांगल गीत (कन्यादान)

दी देवा बाबा जी कन्या को दान।
दानू मा दान कन्या दान।
हीरा दान मोती दान सब कोई देला।
तुम देला बाबा जी कन्या को दान।
तुम होला बाबा जी पुण्य का भागी।

भावार्थ - विवाह की रस्मों में सबसे महत्वपूर्ण होता है कन्यादान। कन्यादान का अर्थ होता है कन्या का दान। इस मांगल गीत में कन्यादान को श्रेष्ठ दान बताकर पिता को कन्यादान के लिय कहा जा रहा है। कहा जा रहा है कि हीरा-दान, मोती दान तो सब करते हैं पिताजी तुम कन्यादान करके पुण्य के भागी बनो।

झ - मांगल गीत (विदाई)

काळा डांडा पीछ बाबाजी काळी छ कुयेड़ी।
बाबाजी मैं यखुली लगदी डर।
यखुली मैन कनके की जाण बिराणा बिदेस ?

भावार्थ - गढ़वाल में कन्या के ससुराल जाने की और मायके को छोड़ने की करूणा को लोकगीत में गाया जाता है। गीत में कहा जाता है कि पिताजी काले पर्वतों के पीछे काले बादल छाए हुए हैं। पिताजी मुझे अकेले वहाँ जाने में डर लगता है। पिताजी मैं पराये देश में अकेले कैसे जाऊंगी ?

संस्कार गीतों की प्रासंगिकता

समय के साथ हुए बदलावों ने लोक समाज में जबरदस्त बदलाव किए हैं। मुट्ठी में कैद दुनिया ने सबको प्रभावित किया है। लोक- संस्कृतियां भी इनसे अछूती नही हैं। मीडिया, सोशल मीडिया ने दुनिया की तमाम जानकारियां और सूचनाएं जितनी जल्दी आम आदमी तक पहुंचाने का कार्य किया उससे आज की भाषा में 'वायरल' हो रहे मुद्दों का प्रभाव लोक-संस्कृति पर भी पड़ा है। नई पीढ़ी सोशल मीडिया से जितनी तल्लीनता से जुड़ी है उससे उसी पर इसका सर्वाधिक प्रभाव भी पड़ा है। ऐसे समय में नई पीढ़ी को अपने लोक की संस्कृति, संस्कार व सामाजिक सरोकारों की जानकारी दी जानी चाहिए। उनमें इसकी समझ विकसित करने के लिए लोक के संस्कार गीत प्रासंगिक हैं। ये गीत नई पीढ़ी को गीत के दृष्टिकोण से सिर्फ उनका मनोरंजन नहीं करते अपितु ये अपने लोक की जानकारी और लोक के संस्कारों की विस्तृत व्याख्या भी उपलब्ध कराते हैं। जहां पुरातन साहित्य लिपिबद्ध न हो वहां ऐसे गीतों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 डॉ॰ गोविन्द चातक, गढ़वाली लोकगीत (खंड एक : लघु गीत), सितम्बर 1956 ,जुगल किशोर एण्ड कंपनी, देहरादून

2 डॉ॰ गोविन्द चातक, गढवाली लोकगीत विविधा, प्रथम संस्करण - 2001, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

3 डॉ॰ शिवानन्द नौटियाल, उत्तराखण्ड की लोकगाथाएँ, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा

4 डॉ॰ यशवन्त सिंह कठोच, सिंह ग्रन्थावली, प्रथम संस्करण - 2016, विनशर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून

5 डॉ॰ सुनीता शर्मा, संस्कार गीत, 2021, हिन्दी ग्रामर और स्टडी नोट्स फॉर एच॰पी॰यू॰ शिमला विश्व विद्यालय